फलदीपिका

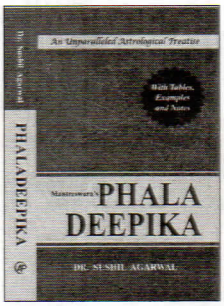

ऋषि मन्त्रेश्वर विरचित 'फलदीपिका' एक अनमोल वैदिक ज्योतिषीय ग्रन्थ है, जिसमें लयबद्ध संस्कृत में लिखित 28 अध्याय हैं। इस ग्रन्थ का ज्योतिषीय शास्त्रों में बहुत उच्च स्थान है। फलदीपिका में सभी ज्योतिषीय पहलुओं का व्यापकता और व्यवस्थित प्रकार से वर्णन है। फलदीपिका के अत्यधिक महत्त्व का एक कारण यह भी है कि इसमें ऋषि मन्त्रेश्वर ने न केवल ऋषि पराशर, ऋषि अत्रि आदि द्वारा विरचित कृतियों का सार प्रस्तुत किया है, बल्कि गोचर आदि जैसे नए विषयों को भी सम्मिलित किया है। फलदीपिका निस्संदेह सभी ज्योतिषियों के लिए एक अनिवार्य ग्रंथ है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक महोदय ने श्लोकों के सटीक अनुवाद के अतिरिक्त भाषा की सरलता पर भी बहुत ध्यान दिया है। इस पुस्तक में श्लोकों में वर्णित योगों की बिन्दुसार रूप में प्रस्तुतिकरण पाठकों के लिए अवश्य ही लाभदायक होगा। श्लोक के सार एवं योगों की संरचित प्रस्तुति के साथ–साथ उदाहरणों के माध्यम से अवधारणाओं की सरल व्याख्या पर बहुत जोर दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रबुद्ध लेखक ने श्लोकों में वर्णित लम्बे–लम्बे प्रकरणों की नीरसता को समाप्त करते हुए उनको तालिकाबद्ध करके सुन्दर प्रस्तुतिकरण किया है। श्लोक के सार और टीका को अलग–अलग लिखा है जिससे श्लोक का अर्थ समझने में कोई संशय उत्पन्न न हो। टीका में प्रबुद्ध जातक ने अनेक उदाहरण और गणनाएं दी हैं जिससे शास्त्रीय योगों आदि को समझने में आसानी हो। इसके अतिरिक्त प्राचीन समय में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की आधुनिक समय के अनुसार सरल व्याख्या की है।

लेखक महोदय की यह कृति प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और ज्योतिषियों के लिए लाभदायक होगी। अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित यह पुस्तक अति सरल, स्पष्ट और बोधगम्य है। ❐

लेखक : डॉ. सुशील अग्रवाल
मूल्य : 375/– पृष्ठ : 432
प्रकाशक: अग्रवाल पब्लिशर्स, H2/132 महावीर एन्क्लेव, नई दिल्ली–110045, दूरभाष : 011–25053154

षड्बल

षड्बल में छः प्रकार के प्रमुख बल स्थान बल, दिग्बल, काल बल, चेष्टा बल, नैसर्गिक बल तथा दृग्बल ज्ञात किये जाते हैं। इन छः बलों के सम्मिलित प्रभाव से ही कोई ग्रह बलशाली अथवा कमजोर बनता है। ग्रहों के फल देने की क्षमता इन छः प्रकार के बलों पर ही निर्भर करती है। इन सभी छः प्रकार के बलों का कुल योग करके षड्बल पिंड ज्ञात किया जाता है। ग्रहों को शुभ फल प्रदान करने के लिए न्यूनतम बल प्राप्त करना आवश्यक है। यदि कोई ग्रह अपेक्षित बल प्राप्त करता है तो वह कुंडली में बताये गये पूरे फल देता है। एक कमजोर ग्रह जिस भाव में हो, जिसका स्वामी हो उनके तथा अपने कारकों को हानि पहुंचाता हुआ अपनी स्वभावगत प्रवृत्ति को छोड़कर अशुभ हो जाता है। कुंडली की व्याख्या करते समय कौन सा ग्रह जातक के लिए अच्छा है या बुरा, इसका निर्णय करने में षड्बल ही सक्षम है। महादशा– अंतर्दशा–प्रत्यंतर्दशा स्वामी कितना शुभ अथवा अशुभ फल देने की क्षमता रखते हैं, इसका आकलन षड्बल के माध्यम से ही किया जा सकता है। कई बार ऐसा भी होता है कि कोई ग्रह षड्बल में अपेक्षित बल प्राप्त करने के बावजूद भी बल में संतुलित नहीं होता। इसका कारण यह होता है कि उस ग्रह के एक दो बल अधिक होते हैं अन्य बल कम। ऐसी स्थिति में उस ग्रह के फल निश्चित नहीं होते अतः फलादेश करते वक्त ग्रह द्वारा प्राप्त षड्बल में से प्रत्येक बल पर नजर डालना जरूरी है।

षड्बल के ऊपर प्रामाणिक पुस्तक का सर्वथा अभाव रहा है। प्रस्तुत पुस्तक लेखकद्वय की एक अनुपम कृति है जिसमें षड्बल की सभी गणनाओं को काफी सहज एवं सुगम रूप में प्रस्तुत किया गया है। ❐

संपादक : अरुण कुमार बंसल
लेखक : अनिल कुमार जैन, डॉ. मनोज कुमार
मूल्य : ₹ 150 **पृष्ठ** : 72
प्रकाशक : अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
X-35, ओखला फेस–II, नयी दिल्ली–20
फोन नं : 011–40541000, 40541040

समीक्षार्थ नई प्रकाशित पुस्तकें आमंत्रित हैं। इस संदर्भ में पुस्तक समीक्षा हेतु पुस्तक की दो प्रतियां निम्न पते पर भेज सकते हैं **पता** : फ्यूचर समाचार, X–35, ओखला फेज–2, नई दिल्ली–20